SMT. ASHWINI BHIDE DESHPANDE

Smt. Ashwini Bhide Deshpande is a Hindustani classical singer in the famous "Jaipur-Atrauli" Khayal singing tradition.

2. Born on 7th October, 1960 into a musical family, Smt. Deshpande received the "Sangeet Visharad" of the "Akhil Bharatiya Gandharva Mahavidyalaya" and the President's Gold Medal in All India Radio Music Competition at the age of sixteen. She has chosen music as her first love and career after completing a doctorate (PhD) in Biochemistry at the Bhabha Atomic Research Centre/University of Mumbai.

3. After imbibing the foundations of Hindustani classical music from her first guru, Late Pt. Narayanrao Datar, Smt. Deshpande started learning the stylised "Jaipur-Atrauli gayaki" under the guidance of her mother, mentor and guru Late Smt. Manik Bhide. Later, senior artist and guru of the Gharana, Late Pt. Ratnakar Pai provided her invaluable guidance on the rare and complex ragas of the Gharana. Along with classical Khayal, semi classical genres like thumri-dadra, devotional bhajans/marathi abhangs and Sanskrit hymns/stotras effortlessly blend in her repertoire. She has performed at various prestigious music festivals within and outside the country and has received acclaim from critics and music lovers all over the world as a vocalist who presents an unmatched blend of raga composition-architecture, vitality, emotion and tonal sweetness, while staying true to the tradition and grammar of the raga.

4. Contributing to the tradition of Khayal, Smt. Deshpande published a book (along with a CD) of self-composed bandishes "Raag Rachananjali" in October 2004. "Raag Rachananjali 2" was published in October 2010. Launched in 2023, her YouTube channel - "Batiya Daurawat" is popular among classical music audiences. Her first recording album was released by HMV in 1985, followed by albums under various banners, including Rhythm House, Times Music, Sony Music, Music Today, Navras Records, and Universal Music.

5. Smt. Deshpande is a 'Top Grade' artist of All India Radio and Doordarshan and has participated in many national programmes of All India Radio-Doordarshan. She has contributed to the enlightenment of lay listeners in India and abroad through lectures and demonstrations on Hindustani classical music in various schools, colleges and music conferences on a regular basis. As a teacher she has guided many disciples; who are now successful concert artists themselves.

6. Smt. Deshpande has received several honours and awards for her contribution to Indian classical vocal music, some of them are Government of Madhya Pradesh's Rashtriya Kumar Gandharva Samman 2005, the first female Hindustani singer to receive this award, Pandit Jasraj Gaurav Puraskar 2005, on the occasion of Pandit Jasraj's 75th birthday, Sahyadri Doordarshan "Sangeet Ratna" Award 2010, first Ganatapaswini Mogubai Kurdikar Award 2011, Government of Maharashtra's "Sanskritic Puraskar 2011, Bangalore Kidney Foundation's "Pandit Mallikarjun Mansur Award" 2013, Sangeet Natak Akademi Award 2014, Madhya Pradesh Government's Rashtriya Kalidas Samman 2016 and D.Litt (Honoris Causa) conferred by ITM University, Gwalior, 2020.

श्रीमती अश्विनी भिडे देशपांडे

श्रीमती अश्विनी भिडे देशपांडे प्रसिद्ध 'जयपुर–अतरौली' खयाल घराने की हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका हैं।

2. 7 अक्टूबर, 1960 को संगीत से जुड़े एक परिवार में जन्मी, श्रीमती देशपांडे ने सोलह वर्ष की आयु में अखिल भारतीय गंधर्व विश्वविद्यालय से "संगीत विशारद" की उपाधि और ऑल इंडिया रेडियो संगीत प्रतियोगिता में राष्ट्रपति स्वर्ण पदक प्राप्त किया। उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय/भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र से जैव रसायन में डॉक्टरेट (पीएचडी) करने के बाद संगीत को अपने पहले प्यार और करियर के रूप में चुना।

3. अपने प्रथम गुरु स्वर्गीय पं. नारायणराव दातार से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शुरुआती शिक्षा ग्रहण करने के बाद, श्रीमती देशपांडे ने अपनी मां, मार्गदर्शक और गुरु स्वर्गीय श्रीमती माणिक भिडे के मार्गदर्शन में शैलीगत 'जयपुर–अतरौली गायकी' सीखना शुरू किया। बाद में, घराने के वरिष्ठ कलाकार और गुरु स्वर्गीय पंडित रत्नाकर पाई ने उन्हें घराने के दुर्लभ और जटिल रागों के बारे में अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया। शास्त्रीय खयाल के साथ–साथ,अर्ध शास्त्रीय विधाएं जैसे ठुमरी–दादरा, भक्ति भजन/ मराठी अभंग और संस्कृत श्लोक/स्तोत्र उनकी प्रस्तुतियों में सहज रूप से घुल–मिल जाते हैं। उन्होंने देश विदेश में विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में प्रस्तुतियां दी है और एक ऐसी गायिका के रूप में दुनिया भर के आलोचकों और संगीत प्रेमियों की तारीफ बटोरी है, जो राग की परंपरा और व्याकरण के प्रति निष्ठावान बने रहते हुए राग रचना–शिल्प, जीवंतता, भावना और स्वर की मिठास का बेजोड़ मिश्रण प्रस्तुत करती है।

4. खयाल की परंपरा में योगदान देते हुए, श्रीमती देशपांडे ने अक्टूबर 2004 में स्वरचित बंदिशों की एक पुस्तक (सीडी के साथ) 'राग रचनांजलि' प्रकाशित की। अक्टूबर 2010 में 'राग रचनांजलि 2' प्रकाशित हुई। 2023 में लॉन्च किया गया उनका यूट्यूब चैनल –"बतिया दौरावत" शास्त्रीय संगीत के श्रोताओं के बीच लोकप्रिय है। उनका पहला रिकॉर्डिंग अल्बम 1985 में एचएमवी ने रिलीज किया था, जिसके बाद विभिन्न बैनरों जैसे रिदम हाउस, टाइम्स म्यूजिक, सोनी म्यूजिक, म्यूजिक टुडे, नवरस रिकॉर्ड्स और यूनिवर्सल म्यूजिक के तहत उनके अल्बम आए।

5. श्रीमती देशपांडे आकाशवाणी और दूरदर्शन की 'टॉप ग्रेड' कलाकार हैं और उन्होंने आकाशवाणी–दूरदर्शन के कई राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लिया है। उन्होंने नियमित रूप से विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और संगीत सम्मेलनों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर व्याख्यानों और प्रस्तुतियों के माध्यम से भारत और विदेशों में आम श्रोताओं के ज्ञानवर्धन में अपना योगदान दिया है। एक शिक्षिका के रूप में उन्होंने कई शिष्यों का मार्गदर्शन किया है; जो अब खुद सफल कलाकार हैं।

6. श्रीमती देशपांडे को भारतीय शास्त्रीय गायन में उनके योगदान के लिए कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें से कुछ हैं, मध्य प्रदेश सरकार का राष्ट्रीय कुमार गंधर्व सम्मान 2005, जिसे प्राप्त करने वाली वह पहली महिला हिंदुस्तानी गायिका थीं, पंडित जसराज के 75वें जन्मदिन के अवसर पर पंडित जसराज गौरव पुरस्कार 2005, सहयाद्रि दूरदर्शन 'संगीत रत्न' पुरस्कार 2010, प्रथम गणतपस्विनी मोगुबाई कुर्दिकर पुरस्कार, 2011, महाराष्ट्र सरकार का 'सांस्कृतिक पुरस्कार' 2011, बंगलौर किडनी फाउंडेशन का 'पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर पुरस्कार' 2013, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 2014, मध्य प्रदेश सरकार का राष्ट्रीय कालिदास सम्मान 2016 और आईटीएम यूनिवर्सिटी, ग्वालियर द्वारा दी गई डी.लिट. (मानद) उपाधि, 2020.